के.एस. कॉलेज लहेरियासराय
विभाग - हिन्दी
विषय - 'चन्द्रगुप्त' नाटक
वर्ग - स्नातक प्रतिष्ठा, भाग - १
शिक्षण माध्यम - पाठ्य - रूप
समय - 11 बजे से 12 बजे तक, 10.9.20
शिक्षक - डॉ. रमेश शर्मा
पाठ - 'चन्द्रगुप्त' नाटक की व्याख्या योग्य पंक्तियाँ

प्रिय - छात्र - छात्राएँ !

पिछली कक्षा में हमलोगों ने नाटक के आवश्यक पंक्तियों की व्याख्या का एक नमूना देखा था। आज पुनः एक व्याख्या करेंगे। परन्तु, एक बात मैं यहाँ स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि किन्हीं पंक्तियों की कोई व्याख्या जरूरी नहीं कि वह अंतिम व्याख्या हो। कभी-कभी दृष्टि व्यक्ति सापेक्ष, स्थान सापेक्ष अथवा काल सापेक्ष होने के कारण भी व्याख्या में अन्तर आ जाता है। इसलिए यदि नाटक या किसी अन्य साहित्यिक विधा की पंक्तियों की व्याख्या हम करें तो उसे पूरी तरह जिस विधा की पंक्तियाँ हों उसी के सापेक्ष होकर व्याख्या करनी चाहिए। उदाहरणार्थ यदि हम नाटक की पंक्तियाँ व्याख्या के लिए चुनते हैं तो उसकी व्याख्या नाटकीय दृष्टि-सापेक्ष-व्याख्या होनी चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखकर हम आज 'चन्द्रगुप्त' नाटक के प्रथम अंक की दो दूसरी कुछ पंक्तियाँ व्याख्या के लिए लेकर आए हैं — जो हैं —

"हाँ-हाँ रहस्य है! यवन आक्रमणकारियों के पुष्कल-स्वर्ण से पुलकित होकर, आर्यावर्त्त की सुख-रजनी की शान्ति-निद्रा में, उत्तरापथ की अर्गला धीरे से खोल देने का रहस्य है। क्यों राजकुमार! सम्भवतः तक्षशिलाधीश वाह्लीक तक इसी रहस्य का उद्घाटन करने गये थे।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'चन्द्रगुप्त' नाटक के प्रथम अंक के प्रथम दृश्य से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से नाटककार जयशंकर प्रसाद जी ने अपनी नाटकीय दृष्टि का परिचय देते हुए तक्षशिला राजकुमार आम्भीक और तक्षशिला में अध्ययन करने गये स्नातक सिंहरण के बीच चल रहे संवाद में वास्तव में भारत में यवन आक्रमणकारियों का साथ देनेवाले तक्षशिलाधीश के छिपे रहस्य का राज खोलने का प्रयास किया है।

प्रसंग यह है कि तक्षशिला के गुरुकुल की एक कक्षा में जब अचानक तक्षशिला राजकुमार आम्भीक प्रवेश करके जब धमकाते हुए यह कहता है कि 'तुम धक्का देने का कुमन्त्र विद्यार्थियों को सिखा रहे हो?' तब सिंहरण और चन्द्रगुप्त और अन्य विद्यार्थी आम्भीक से वाद-विवाद में उलझ जाते हैं। इसी बीच आम्भीक की बहन अलका वहाँ उपस्थित हो जाती है और बीच-बचाव करते हुए अपने भाई को भी समझाती है - जाने दो भाई! इस वन्य निर्झर के समान स्वच्छ और स्वच्छन्द हृदय में हृदय में कितना बलवान वेग है। जाने दो। तब अलका को क्षुब्ध करते हुए आम्भीक कहता है - यह ऐसी बात नहीं है जो यों ही उड़ा दी जाय, इसमें कुछ रहस्य है।

तभी सिंहरण आंभीक की शब्दावलि के ही अंतिम शब्द 'रहस्य' को लेकर उपर्युक्त उक्ति कहता है।

नाटकीय दृष्टि से सिंहरण का यह संवाद अत्यधिक जीवंत इसलिए हो जाता है कि वह आंभीक की शब्दावलि 'रहस्य' को इंगित कर उसी पर वार करता है और यवन आक्रमणकारी क्यों भारत में बढ़ते चले आ रहे हैं इसका रहस्य खोलता है जिसमें भारतीय तक्षशिलाधीश की ही संलिप्तता है जो वाल्हीक तक यवन आक्रमणकारियों से मैत्री का प्रस्ताव लेकर गये थे। मात्र कुछ स्वर्ण मुद्राओं की खातिर।

इस प्रकार इन पंक्तियों ने तत्कालीन भारतीय नरेशों की ओछी बुद्धि ही उजागर होती है जो अपने निजी स्वार्थ में विदेशियों को भारत में प्रवेश का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

(प्रेमा शर्मा)
10.9.20